Volume-12, No. 2 Aug.-2025, pp. Hin.14-16

जनपद बहराइच के माध्यमिक विद्यालयों के वरिष्ठ शिक्षकों में व्यवसायिक संतुष्टि तथा शिक्षा के प्रति विमुखता का एक अध्ययन

मिस. अमिता चौधरी, शोध छात्रा
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश भारत।
डॉ. तीर्थराज, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश भारत।

सार–
मनुष्यों में विमुखता का विचार काफी पुराना है समाज में स्थित सभी संगठनों में मनुष्यों में विमुखता का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। विमुखता से तात्पर्य किसी वस्तु अथवा व्यक्ति से अलगाव के रूप में किया गया है। विचारकों ने सिर्फ आधुनिक समाज में विमुखता सम्बन्धी लक्षणों एवं विशेषताओं एवं तथ्यों अथवा परिस्थितियों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द– विमुखता, व्यवसायिक संतुष्टि,

साहित्य समीक्षा–

कार्लमार्क्स (1964) ने विमुखता को सिर्फ पूंजीवादी व्यक्तियों के समाज में तथा **दुर्खीम (1960),** ने इसे समाज के अंग के रूप में देखा है। कार्लमार्क्स महोदय ने विमुखता को भटके हुए रूप में देखा जैसे मनुष्य की स्वतंत्रता को खोना, उसे निर्धन या दरिद्र बनाना इत्यादि।

कानूनगो (1992) ने अपने अध्ययन में अनुभव किया कि विद्यालयों में विमुखता का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। कम्प्यूटर तथा मोबाइल क्रान्ति से व्यक्ति का सामाजिक दायरा सिकुड़ रहा है और उसमें अलगाव की भावना बढ़ती जा रही है। **मन (2001),** ने विमुखता को परिभाषित करते हुए कहा कि यह समूह में अलगाव की भावना का अनुभव है।

ओल मैन महोदय (1971) ने अपने विमुखता सम्बन्धी विचारों में एक और आयाम जोड़ा जैसे पूंजीपतियों में विमुखता रोमन विचारकों ने विमुखता की समस्या के सम्बन्ध में न सिर्फ श्रमिक एवं पूंजी पतियों में, बल्कि व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्या जो उसे बौद्धिक स्तर (अवबोध), क्रियाशीलता एवं स्वतंत्रता का क्षेत्र एवं सीमीत था प्रत्येक प्रकार के मानव व्यवहार एवं सामाजिक स्थिति का काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करती है।

एक अध्ययन में **जितेन्द्र मोहन एवं जोगेन्द्र (1986) ने** आयु एवं कारक के सम्बन्ध में शहरी युवाओं के अलगाव एवं सामाजिक–आर्थिक स्तरीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया। भारत में **मोनिका एवं नीरू देवी ने (2017),** ने दिल्ली विश्वविद्यालय के शहरी एवं ग्रामीण कॉलेज अध्ययनों के अलगाव की तुलना की। विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के कॉलेजों के पुरूष छात्रों ने ग्रामीण क्षेत्र के कॉलेजों के पुरूष छात्रों की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किए इससे यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के आने वाले पुरूष छात्र विश्वविद्यालय के स्तर कॉलेजों से बहुत अलग–अलग महसूस करते है।

जॉनसन (2005), ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि सहकर्मी अलगाव ने शैक्षणिक उपलब्धि के विपरीत सम्बन्ध प्रदर्शित किया, ज्यादातर मामलों में, शैक्षणिक उपलब्धि और छात्र उपयोग वेबसिटी के बीच महत्वपूर्ण भविष्य कहलाने वाला सम्बन्ध वक्र रेखीय थे। **सोनिया गुप्ता (2018)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरूष और महिला किशोरों में विमुखता के बारे में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही है। उच्च और मध्यम डिग्री के अलगाव का प्रचलन आमतौर पर दोनों लिंगो में अधिक होता है। **महाजन (2020),** ने एक अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि महिला छात्रों ने पुरूष छात्रों की तुलना में उच्च शक्तिहीनता, विमुखता का स्कोर किया आत्म अलगाव, अर्थहीनता और अलगाव पर पुरूष और महिला कॉलेज जाने वाले छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही पाया गया। **रावत एवं मोदी (2021),** ने अपने अध्ययन में यह ज्ञात किया कि

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि हेतु लिंगभेद के आधार पर कोई अन्तर नही पाया गया।

उपर्युक्त धारणाओं को ध्यान में रख कर वर्तमान अनुसंधानकर्ती ने एक ऐसे अध्ययन की आवश्यकता का अनुभव किया जिसमें वारिष्ठ पुरुष एवं महिला अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि के साथ शिक्षा के प्रतिविमुखता का अध्ययन किया जाये।

अनुसंधान के उद्देश्य–

1. माध्यमिक विद्यालयों के वरिष्ठ पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षा के प्रतिविमुखता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के वरिष्ठ पुरूष एवं महिला अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं– वर्तमान अनुसंधान की निम्नलिखित परिकल्पनाएं है–

1. माध्यमिक विद्यालयों के वरिष्ठ पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षा के प्रतिविमुखता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों की वरिष्ठ पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अनुसंधान विधि– अनुसंधानकर्ती ने जनपद–बहराइच के माध्यमिक विद्यालयों से 100 वरिष्ठ शिक्षकों का चयन किया जिसमें 50 पुरूष 50 महिला अध्यापक थीं, यह चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया। इन अध्यापकों से अमिता भटनागर की शिक्षक विमुखता **मापनी (1980), तथा राठौर की (1983)** की शिक्षक विमुखता मापनी का प्रयोग आंकड़ों को प्राप्त करने में किया इन मापनियों से शिक्षक विमुखता एवं व्यवसायिक संतुष्टि में प्राप्त आंकड़ों को सारणीबद्ध किया। इन आंकड़ों से अनुसंधानकर्ती ने वरिष्ठ पुरूष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षक विमुखता एवं व्यवसायिक संतुष्टि आवृत्ति वितरणों से पृथक–पृथक मध्यमान तथा मानकविचलन ज्ञात किये दोनों समूहों के लिए टी–टेस्ट लगाकर मध्यमानों के अन्तर की सर्थकता ज्ञात की गयी।

इस प्रकार अनुसंधान कर्ती ने सांख्यकी के प्रयोग में मध्यमान मानक विचलन तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया।

विश्लेषण तथा निष्कर्ष– अनुसंधान कर्ती ने प्रथम परिकल्पना की सत्यता की जांच करते हुए वरिष्ठ पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षा के प्रति विमुखता एवं व्यवसायिक संतुष्टि के आकड़ों से मध्यमान ज्ञात किये जिन्हें निम्नलिखित सारणियों में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या–1

वरिष्ठ पुरूष एवं महिला अध्यापकों के शिक्षा के प्रतिविमुखता के मध्यमान मानक विचलन तथा टी का मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
पुरूष अध्यापक	50	90.5	19.124	4.12	.01 स्तर पर सार्थक
महिला अध्यापक	50	102.7	21.93		

सारणी संख्या–2

वरिष्ठ पुरूष एवं महिला अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य मान मानक विचलन एवं टी का मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
महिला अध्यापक	50	79.49	3.32	3.89	.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
पुरूष अध्यापक	50	81.32	4.16		

उर्पयुक्त सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि 50 पुरूष शिक्षकों की शिक्षा के प्रति विमुखता का मध्यमान 90.5 तथा मानक विचलन 19.124 था। इसी प्रकार महिला शिक्षकों में यह मध्यमान 102.7 तथा मानक विचलन 21.93 था। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता टी–टेस्ट लगाकर ज्ञात की गयी और टी का मान 4.115 था, जो .01 स्तर के मान 2.58 से अधिक था। इस प्रकार प्रथम परिकल्पना निरस्त की जाती है। चूंकि वरिष्ठ महिला अध्यापकों का मध्यमान 102.27 तथा जो वरिष्ठ पुरूष अध्यापकों के मध्यमान 90.5 से अधिक था इसलिए यह कहा जा सकता है कि वरिष्ठ महिला अध्यापक पुरूष अध्यापकों की तुलना में शिक्षा से अधिक विमुख थी।

व्यवसायिक संन्तुष्टि सारणी संख्या–2 के सम्बन्ध में प्राप्त आकड़ों से यह पता चलता है कि 50 वरिष्ठ पुरुष अध्यापक की व्यवसायिक संतुष्टि का मध्यमान (81.32) उनके समान आयु की महिला अध्यापकों के मध्यमान (79.49) से 1.83 अधिक था। इन दोनों समूहों के प्रमाणिक विचलन टी

क्रमशः 4.16 तथा 3.32 थे। दोनों मध्यमानों के 1. 83 अन्तर की सार्थकता जानने के लिये टी का मान ज्ञात किया गया जो 3.89 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी का मान 3.89 सार्थकता के .01 स्तर पर टी महत्वपूर्ण पाया गया क्योकि टी का इस स्तर पर सारिणी मान 2.58 था। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और यह कहा जा सकता है कि वरिष्ठ पुरूष एवं महिला अध्यापकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि समान नहीं है। चूंकि पुरुष अध्यापकों की व्यवसायिक संन्तुष्टि का मध्यमान उनकी समकक्ष महिला अध्यापकों से अधिक था। अतः यह भी कहा जा सकता है कि वरिष्ठ पुरूष अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि महिला अध्यापकों से अधिक है।

निष्कर्षों का सारांश–

1–वरिष्ठ महिला अध्यापक पुरूष अध्यापकों की तुलना में शिक्षा से अधिक विमुख थी।

2–वरिष्ठ पुरूष अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि महिला अध्यापकों से अधिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Jitender Mohan and Joginder (1986), "Alienation of Urban youth. A study in relation to Age Factor." Indian Journal of Clinical Psychology. 13:pp 55-58.
2. Johnson, W G.M. (2005), “Student Alienation, Achievement and Web CT use.” Educational Technology & Society, 8(2) pp. 179-189.
3. Kalasen, R.N. and Cheepu M.U(2010), “a factor on teacher’s self-efficacy and job satisfaction: Teachers Gender, Years of Experience and Job Stress General of educational psychology, 102(2) Page-741.
4. Kanungo, R. N. (1982), "Work Alienation: an Integrative Approach." New York: Praeger Publishers.
5. Mahajan, V.G. (2020), "A Study of Alienation on among Male and Female College Group Student." The International Journal of Indian Psychological 8, (4), Oct-Dec, (2020).
6. Mann S.J. (2001), "Alternative Perspective on the Student Experience: Alienation and Engagement." Studies in Higher Education, 26: pp 7-13.
7. Monika, and. Neeru Devi, (2017), "A Comparative Study of Alienation among Urban and Rural College Students of Delhi University." International Journal of Innovative Science and Research Technology, 2, 5, pp 804-808.
8. Ravat, UC and Modi, J (2021), “A study of Job Satisfaction of secondary school teachers of Mehsana Taluka, Research Gate.
9. Sonia Gupta, (2018), "Alienation of male and female adolescents in relation to locus of control" Bhartiyam international journal of education & research, 7 (2), pp 122-134.
10. Toropova A, Mirvarg, E and Jonson, S (2021) teachers job satisfaction: The importance of school working conditions and teachers career retax, Educational Review volume-7 (3) page-71-97.